P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रतापगढ़ जनपद (उ0प्र0) में अपवाह प्रणाली : एक भौगोलिक अध्ययन

सारांश

नदी तन्त्र जो निश्चित भू–भाग में संगठित है, उसका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव उस क्षेत्र विशेष की स्थलाकृति, कृषि, संस्कृति, मानव–क्रिया कलाप पर परिलक्षित होता है। अध्ययन क्षेत्र में सामान्य ढाल का अनुकरण करती हुई नदियां प्रवाति होती हैं, जिनका जल–प्रवाह मार्ग अत्यन्त घुमावदार है। मुख्य नदियों की सहायक नदियां स्थानीय समतल मैदान क्षेत्रों से जल लाकर मुख्य सरिता–जल मार्ग को प्रदान करती है। यद्यपि मुख्य सरिता में जल प्रायः प्रत्येक भाग में अवश्य रहता है, परन्तु वर्षा–काल में जल वृद्धि हो जाती है तथा इसका वेग तीव्र होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र प्रतापगढ़ जनपद में प्रमुख नदियों एवं झीलों का अध्ययन किया गया।

मुख्य शब्द : स्थलाकृति, कृषि, संस्कृति, सामान्य ढाल का अनुकरण, समतल मैदान, नदियाँ।

अनुज सिंह
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
वीर बहादरु सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर, उ0प्र0

प्रस्तावना

साधारणतया प्रवाह–प्रणाली का तात्पर्य नदी–क्रम से ही लिया जाता है। प्रवाह–प्रणाली पर क्षेत्र विशेष की भू–संरचना भ्वाकृति, जलवायुयिक–तत्वों आदि का प्रभाव पड़ता है, जिनकी भिन्नता एवं विषमता से इसके स्वरूप में विविधता परिलक्षित होती है। इनमें भू–गर्भित संरचना तथा जलवायु का प्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टव्य होता है। कभी–कभी किसी नदी की प्रवाह–व्यवस्था का प्रवाह अन्य नदियों की प्रवाह–व्यवस्था पर पड़ता है। नदी अपहरण की क्रिया इसका दृष्टान्त है। अध्ययन क्षेत्र में प्रवाहित सई नदी के समानान्तर परित्यक्त अनेक झीलें हैं, जो एक क्रम में स्थित हैं, इससे स्पष्ट होता है कि इस नदी ने अतीत में अपना मार्ग परिवर्तित अवश्य किया होगा।

अध्ययन–क्षेत्र में प्रवाहित नदियों की क्षैतिज एवं ऊर्ध्वाधर अपरदन–सामर्थ्य क्षीण हो गई है। वर्षाकाल में मैदानी क्षेत्रों की मिट्टी जल के साथ प्रवाहित होती है, जो नदी के पार्श्वो पर निक्षेपित हो जाती हैं, जिससे लघु उर्वरक खण्डों का सृजन हो जाता है, जिसका कृषि की दृष्टि से स्थानीय महत्व अधिक होता है।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश का दक्षिण–पूर्वी भाग है जिसका विस्तार $25^{0}34'$ से $36^{0}11'$ उत्तरी अक्षांश तथा $81^{0}19'$ से $82^{0}17'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इस जनपद की लम्बाई पश्चिम से पूर्व 115 किमी0 तथा चौड़ाई उत्तर से दक्षिण 40 किमी0 है। प्रतापगढ़ की उत्तरी सीमा सुल्तानपुर जनपद, पूर्वी सीमा जौनपुर जनपद, दक्षिणी सीमा इलाहाबाद जनपद, दक्षिणी–पश्चिमी सीमा कौशाम्बी जनपद तथा पश्चिमी सीमा रायबरेली जनपद द्वारा निर्धारित होती है अध्ययन क्षेत्र का औसत समुद्र तल की ऊँचाई 107 मीटर है। जनपद में 5 तहसीलें तथा 17 विकास खण्ड हैं।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध प्रपत्र के लिये निम्न साहित्य का अध्ययन किया गया है– जिनमें आर0सी0 तिवारी (2008) : भारत का भूगोल, एन0सी0आर0टी0–(2006) : भारत भौतिक पर्यावरण, डॉ0 विमलेश कुमार पाण्डेय (2007) : प्रतापगढ़ का प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व, महेन्द्र सिंह (2013): जनपद प्रतापगढ़ के भू–आर्थिक संसाधनों पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव : एक भौगोलिक विश्लेषण''। अलका गौतम (2012) : भारत का भूगोल।

प्रतापगढ़ जनपद (उ0प्र0)

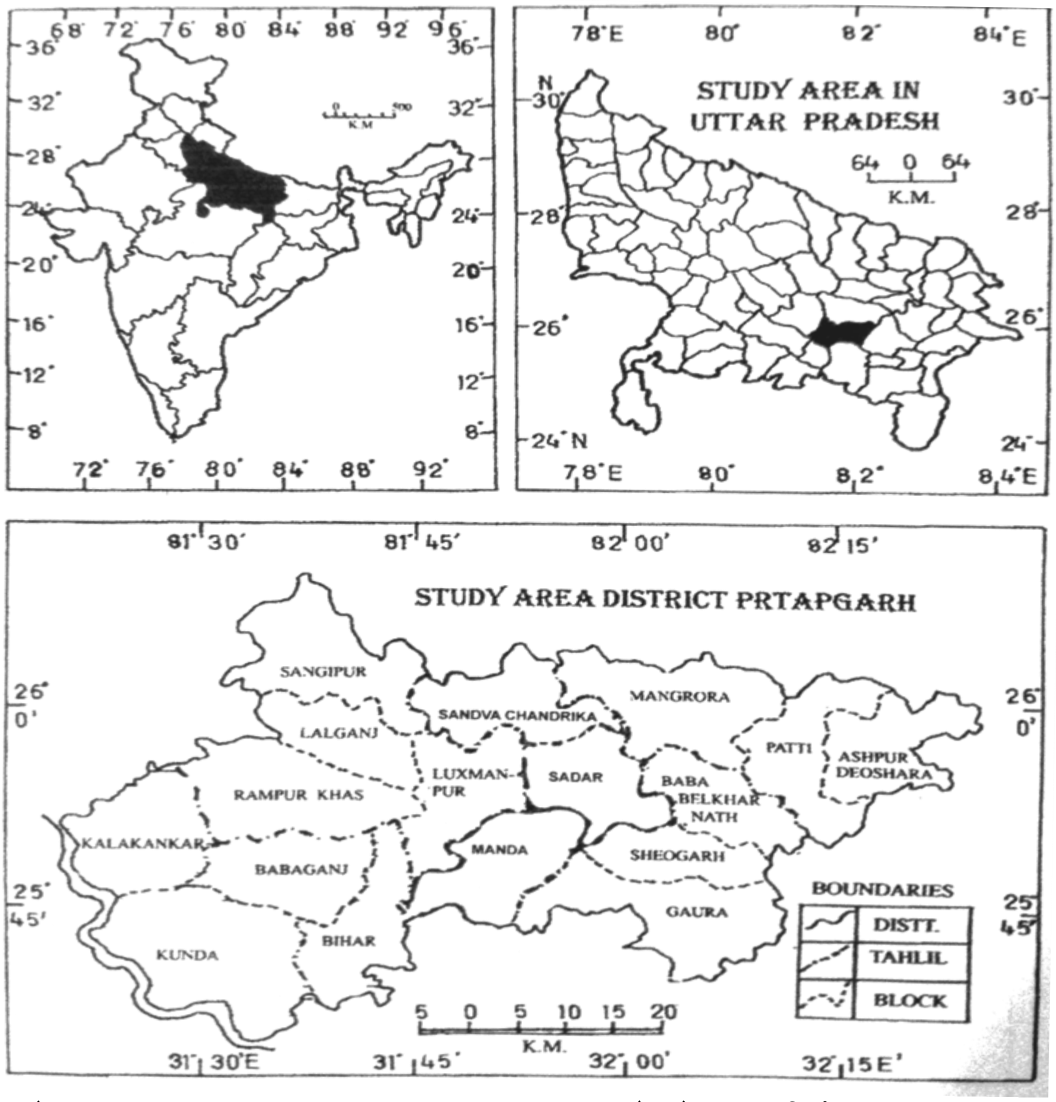

अध्ययन का उद्देश्य

1. प्रतापगढ़ जनपद में नदियों एवं नालों का अध्ययन करना।
2. प्रतापगढ़ जनपद में झीलों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

शोध–पत्र में द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। शोधकार्य से सम्बन्धित द्वितीयक आंकड़ों का संकलन जिला सांख्यकीय पत्रिका के तथ्यों के आधार पर किया गया है। चयनित आँकड़ों तथा प्रतिदर्शों को विभिन्न घटनाओं एवं वितरणों के आधार पर एकत्र कर विभिन्न चरणों के परिपेक्ष्य में उनका विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख नदियाँ

अध्ययन क्षेत्र की सम्पूर्ण प्रवाह प्रणाली उच्चावचीय ढाल के स्वरूप का अनुसरण करती हैं। यहाँ उत्तर–पश्चिमी से दक्षिण–पूर्व दिशा में जल प्रवाह प्रणाली सामान्य रूप से विकसित है। सई नदी और गंगा नदी अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख नदी हे। इसके अतिरिक्त बकुलाही, नैया, परैया, लोनी, सकरनी तथा चमरौरा आदि सहायक नदी है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में सामान्य अपवाह प्रणाली विकसित है जो निश्चित रूप से अपने उच्चावच स्वरूप का अनुसरण करती है। अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ निम्नलिखित हैं–

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

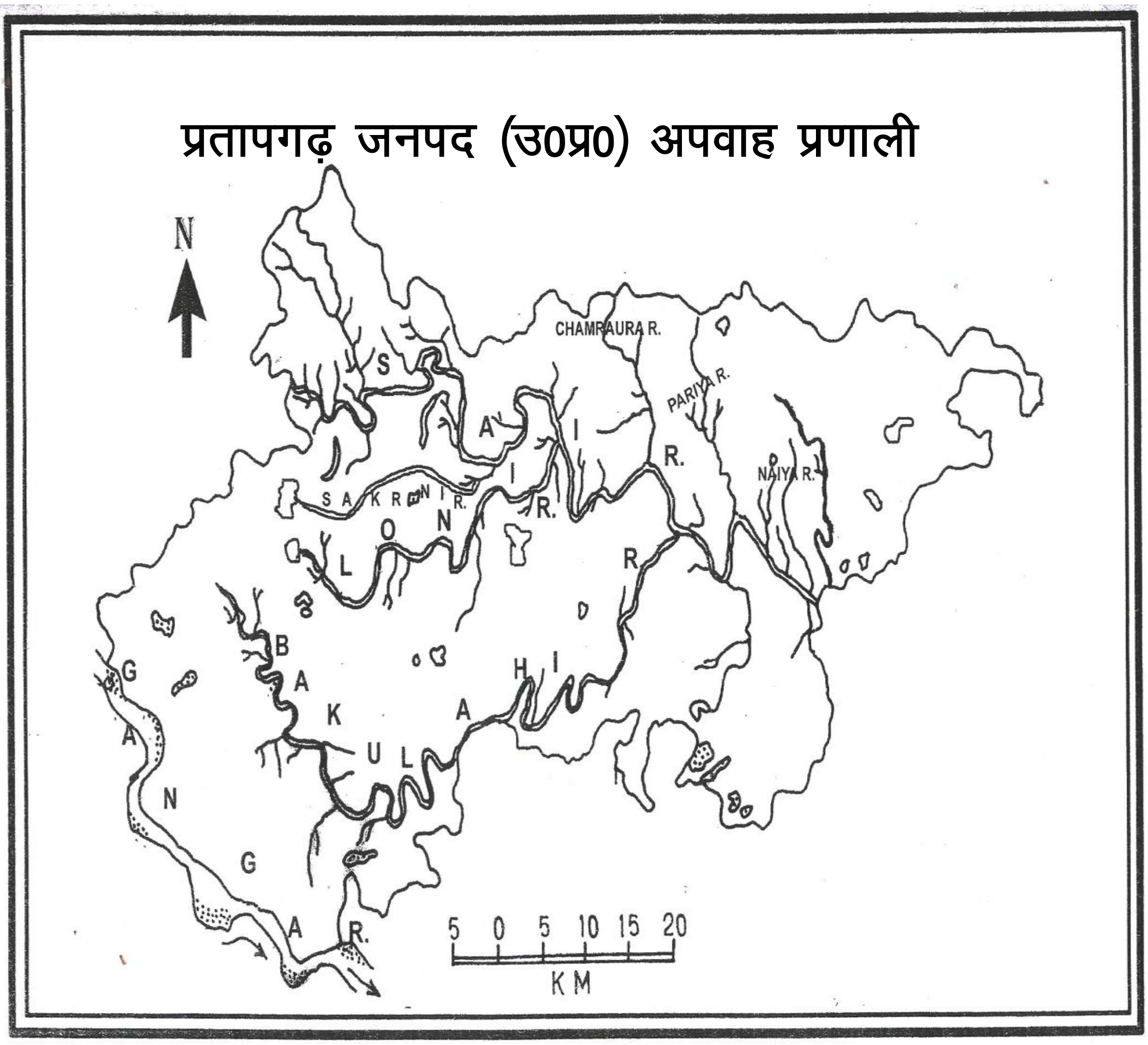

गंगा नदी

अध्ययन क्षेत्र की यह प्रमुख नदी है। इसकी उत्पत्ति भागीरथी के रूप में गंगोत्री के समीप 25 किमी0 की लम्बाई में फैले गोमुख हिमनद से हुई है। गंगा नदी अलकनन्दा और भागीरथी का सम्मिलित रूप है। यह नदी दक्षिण– पश्चिम में फतेहुपर–इलाहाबाद की सीमा रेखा को स्पर्श करती हुई 50 किमी0 तक अध्ययन क्षेत्र में प्रवाहित होती है। यह नदी अध्ययन क्षेत्र के मुरादपुर गांव से होती हुई मानिकपुर परगना, कालांकाकर का किला, मानिकपुर के पुराने कस्बें और गोतनी तथा दक्षिण बिहार विकास खण्ड की समा को छते हुए जहानाबाद पहुंचती है। यह नदी मुरादपुर से गोतनी तक पुराने सकरे मार्ग से होती हुई मानिकपुर किले के पास एक ऊंची धारा के रूप में गिरती है गोतनी में 9 से 24 कि0मी0 तक नये खादर मृदा का निर्माण करती है जो कि बहुत संकरी पट्टी के रूप में विस्तृत है।

सई नदी

सई नदी अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख नदी है। सई नदी जनपद हरदोई के हरदों झील से निकलकर लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली में बहती हुई मुस्तफाबाद के पश्चिम में अठेहा के निकट जनपद प्रतापगढ़ में प्रवेश करती है। अठेहा से आगे बहती हुई यह नदी अठेहा एवं रामपुर की सीमा रेखा का निर्धारण करती है। जिसका प्रवाह पश्चिमी से पूर्व की ओर है। सई नदी की कुछ सहायक नदियां उत्तर दिशा की ओर प्रवाहित होती हुई सई नदी के दाएं तट पर मिलती है। इसकी प्रमुख सहायक नदिया–बकुलाही, लोनी, सकरनी, छैया, नैया, चमरौरा, परैया, ताम्बुरा। सई की कुछ सहायक नदियां दिनों–दिन वर्षा की कमी के कारण अत्यन्त क्षीण होकर नाले के रूप में परिवर्तित हो चुकी हैं। इनमें मट्टन, नैया एवं छैया प्रमुख है। प्रतापगढ़ से जौनपुर तक यह नीद 72 किमी0 की या.ा कर चुकी होती है, सई नदी जौनपुर के दक्षिण–पूर्व दिशा में 32 किमी0 दूर गोमती नदी में मिलती है।

बकुलाही

बकुलाही नदी जनपद प्रतापगढ़ के उत्तरी–पश्चिमी सीमा में प्रवाहित होती है। जनपद रायबरेली की सीमा से निकलकर (उमरन ताल) यह नदी अध्ययन क्षेत्र के कुण्डा तहसील में प्रवेश करती है। यह नदी सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में रूकी हुई झील के समान दिखाई देती है। बकुलाही नदी लवाना भवानीगंज के निकट से प्रवाहित होती हुई संग्रामगढ़ तथा पुनः सीधे पूर्व

दिशा में आगे बढ़ती हुई सई नदी में दिलीपपुर के पास मिल जाती है।

लोनी

लोनी नदी सई की दक्षिणावर्ती सहायक नदी है। इसका प्रवाह पश्चिम से पूर्व की ओर है। इसका उद्गम स्थल रामपुर संग्रामगढ़ विकास खण्ड के ढिंगवस ग्राम सभा के गंगाराम का पुरवा गांव है। इसमें ढिंगवत ताल एवं ढिंगवस नाले का पानी मिलकर गंगाराम का पुरवा में नदी का रूप ले लेता है। पथरहा गांव के पास से उत्तर की ओर मुड़कर 45 किमी0 की दूरी पर यह कोड़री गांव के उत्तर की ओर सई नदी के दाहिने तट पर इसमें मिल जाती है।

सकरनी

सई नदी की सहायक सकरनी नदी का उद्गम स्थल जेठवारा बाजार से लगभग 25 किमी0 पूर्व दिशा की ओर भीखमपुर गांव के दक्षिण में नेवाड़ी ताल से है। नेवाड़ी ताल से तीन तरफ घिरे गोसाईपुर छोटे से गांव के पास एक नाले के रूप में सकरनी अस्तित्व में आयी है। प्रारम्भ में यह पूर्व की ओर प्रवाहित होती हुई उत्तर दिशा की ओर मुड़ जातीद है तथा पांचों सिद्ध मन्दिर के पूर्व में सई नदी के दाहिने तट पर इसमें मिल जाती है। इस नदी में विभिन्न छोटे–छोटे नालों एवं पहरों का जल मिलता है।

कैमूर

नैया नदी के पश्चिम में लगभग 80 किमी0 दूरी कैमूर नदी सई नदी से मिल जाती है। कैमूर नदी सुल्तानपुर जिल से एक पतली धारा के रूप में निकलती है और पट्टी पगरना के उत्तर–पश्चिम भाग से प्रवाहित होती हुई सदर परगना में बालाघाट के पास सई नदी से मिल जाती है। इस नदी का अपवाह–क्षेत्र अधिक है जो वर्षा ऋतु में अधिक मात्रा में जल का परिवहन करती है।

परैया

यह सई की सहायक नदी है जो उत्तर से दक्षिण की ओर प्रवाहित होती है। यह नदी गंगेहटी गांव के उत्तर से दक्षिण की ओर प्रवाहित होती हुई कई विसर्पों का निर्माण करती हुई लगभग 25 किमी0 क ीदूरी तय करती है। यह पट्टी परगना से बहुत संकरे रूप से निकलती है। यह कैमरू नदी के दक्षिण में तथा इसके समानान्तर लगभग 6 किमी0 तक बहती है। यह प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन के बाद सई नदी के साथ दक्षिण में समानान्तर बहती हुई बाबा बेलखरनाथ धाम के पास सई दी में मिल जाती है।

गोमती

यह नदी अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी–पूर्वी भाग में 8 किमी0 की दूरी तक जनपद प्रतापगढ़ की सीमा में सुल्तानपुर से जौनपुर की ओर बहती है। यहां इब्राहीमपुर घाट प्रसिद्ध स्थल के रूप में गोती के तट पर स्थित है।

चमरौरा

चमरौरा नदी सई की प्रमुख सहायक नदी है। इसका प्रवाह उत्तर से दक्षिण की ओर है। यह नदी अध्ययन क्षेत्र में सुल्तानपुर जनपद की सीमा के सहारे चन्दौका एवं काछा गांव के पास जनपद की सीमा में प्रवेश करती है। यह दक्षिण दिशा की ओर विसर्पों का निर्माण करती हुई छत्ता का पुरवा गांव के पूर्व तथा बराछा गांव के पश्चिम में गायघाट के पास सई नदी के बायें तट से मिल जाती है।

अध्ययन क्षेत्र में प्रवाहित प्रमुख नाले

अध्ययन क्षेत्र प्रतापगढ़ जनपद में प्रवाहित प्रमुख नाले निम्नलिखित है।

नैया लाला

अध्ययन क्षेत्र में सई की सहायक नदियों में एक नैया नाला है जो रायबरेली जिले से निकलकर अठेहा गांव के उत्तर से दक्षिण दिशा में बहती हुई सई नदी में मिल जाता है। इसकी लम्बाई 36 किमी0 है। यह वर्ष भर एक पतली धारा के रूप में प्रवाहित होता है। इसका प्रवाह उत्तर से दक्षिण की ओर है।

छैया नाला

यह नाला रानीगंज कैथोला बाजार के दक्षिण से लगभग 02 किमी0 की दूरी से निकलकर रायबरेली जनपद के सलोन तहसील के पास से उत्तर पश्चिम भाग में 3 किमी0 की यात्रा करने के बाद सई नदी में मिल जाता है।

मट्टन नाला

इस नाले की उत्पत्ति रायबरेली जनपद के जायस में स्थित बछऊ झील से हुई है, इसका स्वरूप सई नदी जैसा हैं रायबरेली के नसीराबाद, बभनपुर होकर यह नाला प्रतापगढ़ में प्रवेश करता है तथा मठिया; कुसौली, पूरे भगवत, पूरे बक्सी, उपाध्यायपुर, पूरे जैन, खानीपुर, नवाबाग, ढ़कवा, कलुआघाट आदि गावों से होकर यह नाला गुजरता है।

झीलें

अध्ययन क्षेत्र में अनेकों लम्बी एवं कम चौड़ी आकार वाली ऐसी झीलें हैं जिनके जल का उपयोग कृषि में किया जाता है। वर्षा ऋतु या अन्य किन्हीं कारणों से इनमें भर जाने वाली जलराशि के निकलने की कोई उचित व्यवस्था नहीं है। इन झीलों के जल का उपयोग कृषि कार्य में हो जाने के कारण ठण्डे मौसम में भी झीले शुष्क हो जाती हैं।

अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख झीलें निम्न हैं –

बेंती झील

अध्ययन क्षेत्र की एकमात्र गंगा की सहायक दुअर नदी एवं गंगा के मध्य एक विलक्षण आकृतिवाली पट्टी है जिसे बेंती झील कहा जाता है। यह क्षेत्र समतल है और ऐसा प्रतीत होता है कि 18 किमी0 में प्रसरित यह क्षेत्र लेटा सा है। इस झील के किनारों की ऊँचाई लगभग 10–30 फुट तक है, जो उत्तर, पश्चिम एवं पूर्व दिशा में इन्हीं किनारों से परिवृत्त है।

नौरेहा

नौरेहा झील अध्ययन क्षेत्र के पट्टी तहसील की सर्वाधिक लम्बी झील है जो लगभग 10 वर्ग किमी0 क्षेत्र में प्रसरित हे। इसमें पर्याप्त जलराशि संचित रहती है, परिणामस्वरूप यह झील किसी भी मौसम में शुष्क नहीं होती है।

प्रमुख झीलों के अतिरिक्त अध्ययन क्षेत्र में कई झीलें हैं, जो निम्न है–

1. प्रतापगढ़ तहसील में जेठवारा के पास रंगोली, सिरसी

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

और नेवारी नामक झीलें हैं।

2. कुण्डा तहसील में रायपुर, भगदरा तथा डेरवा नामक झीलें हैं।
3. लालगंज तहसील में रामपुर परगने के पास संग्रामगढ़ के दक्षिण– पश्चिम में अवस्थित झीलों में रायपुर तथा जसमिन्दा की झीलें मध्य में, दक्षिण में सदासई झील तथा दक्षिण–पश्चिम में नरई झील है।

उपर्युक्त झीलें स्थानीय कृषि–कार्य में अपना प्रभूत योगदान देती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *प्रसाद, डगली : गजेटियर जनपद प्रतापगढ़, अग्रवाल बुक डिपो, प्रतापगढ़, पृ0 148–152.*
2. *पाण्डेय, बी0बी0 : उत्तर प्रदेश की प्रमुख नदियों का भौगोलिक अध्ययन, अमित पब्लिशर्स, इलाहाबाद।*
3. *मामोरिया, चतुर्भुज : भारत का भूगोल पृ0 165–168.*
4. *जिला सांख्यकीय पत्रिका, कार्यालय जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी, प्रतापगढ़ वर्ष (2017).*
5. *एन0सी0आर0टी0 (2006) : भारत भौतिक पर्यावरण, नई दिल्ली।*
6. *भूगोल और आप (मार्च–अप्रैल–2017).*
7. *सिंह, सविन्द्र 2010 : भौतिक भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद*

Please add Conclusion in your paper.